श्री रामायण की आरती

आरति श्रीरामायनजी की | कीरति कलित ललित सिय पी की ||
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद | बालमीक बिग्यान बिसारद ||
सुक सनकादि सेष अरु सारद | बरनि पवनसुत कीरति नीकी || १ ||

गावत बेद पुरान अष्टदस | छहो सास्त्र सब ग्रन्थन को रस ||
मुनि जन धन संतन को सरबस | सार अंस संमत सबही की || २ ||

गावत संतत संभु भवानी | अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी ||
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी | काकभुसुंडि गरुड के ही की || ३ ||

कलि मल हरनि विषय रस फीकी | सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की ||
दलन रोग भव मूरि अमी की | तात मात सब बिधि तुलसी की || ४ ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133